CERTIFICATE

I certify that the thesis entitled **Narendra Kohli aur Amish Tripathi ke Upanyasone mein Mithak ka Thulnatmak Adhyayan (Ram Katha Shrinkala ke Vishesh Sandarbh mein)** submitted for the degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D)** by **Ms. Niraja. T. K** is the record of research work carried out by her during the period from 2021 to 2024 under my guidance and supervision, and that work has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship, or other Titles in this University or any other University or other Institution of Higher Learning.

03.06.2024

Signature of the HOD

Department of Hindi with Designation

03.06.2024.

Signature of the Supervisor

03.06.2024

Signature of Dean

School of Arts and Social Sciences

DECLARATION

I declare that the thesis entitled **Narendra Kohli aur Amish Tripathi ke Upanyasone mein Mithak ka Thulnatmak Adhyayan (Ram Katha Shrinkala ke Vishesh Sandarbh mein)** submitted by me for the degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D)** is the record of work carried out by me during the period from 2021 to 2024 under the guidance of **Dr. G. Shanthi**, Associate Professor, Department of Hindi and has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associate ship, Fellowship, Titles in this University or any other University or other similar institution of Higher Learning.

24/2024

Signature of the Candidate

आभार प्रदर्शन

पी. एच. डी. को पूरा करना मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है । इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए मैं अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइंस एंड हायर एजुकेशन फॉर वुमेन कोयम्बत्तूर के सम्माननीय कुलाधिपति महोदय डॉ. टी. एस. के मीनाक्षी सुन्दरम अण्णा अवर्गल, कुलपति महोदया डॉ. वी. भारती हरिशंकर और कुलसचिव (प्रभारी) महोदया डॉ. एच. इन्दु के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे हिन्दी विभाग में पी. एच. डी. का प्रवेश दिलाते हुए इस शोध कार्य करने का सुअवसर दिया।

मैं हमारी संकायध्यक्षा एवं विभागध्यक्षा डॉ. शोभना कोक्काडन महोदया के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध प्रबंध को पूरा करने में प्रोत्साहन दिया।

मैं हमारे परीक्षा नियंत्रक महोदया डॉ. के. मणिमोलि के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध प्रबंध को पूरा करने में प्रोत्साहन दिया। मैं हमारे अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक (प्रभारी) महोदया डॉ. पी. ललिता के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे कई प्रकार के सुझाव एवं सहायता प्रदान की।

मैंने यह शोध कार्य डॉ. जी. शान्ति महोदया के सुयोग्य निर्देशन में किया है । इसका पूरा श्रेय उन्हीं को जाता है । मुझ पर कोई भी संकट आने पर वह हमेशा मेरे साथ खड़ी रही। उन्होंने बहुत सहायता की एवं अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया। उनके प्रोत्साहन एवं उचित मार्गदर्शन से ही मैं इस शोध कार्य को सफलता से पूरा कर पाई, मेरे भविष्य को उज्वल बनाने में डॉ. जी. शान्ति महोदया का बहुत बड़ा योगदान है जिसके लिए मैं उन्हें हाथ जोड़कर हृदय से अपना आभार प्रकट करती हूँ ।

मैं डॉक्टरल कमिटि के विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद कोव्वप्रथ, प्रोफसर, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय और डॉ. एस.वी.एस.एस. नारायण राजु, प्रोफसर, हिन्दी विभाग, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे अपने शोध कार्य हेतु कई सुझाव दिये।

मैं साहित्यकार अमीश त्रिपाठी की सहमती एवं आशीष वचन के लिए अपना आभार प्रकट करती हूँ ।

हमारी पुस्तकालयध्यक्ष एवं वहाँ के कर्मचारियों के प्रति मैं आभारी हूँ जिन्होंने पूरे शोध प्रबंध लेखन के लिए उपयुक्त संदर्भ सामग्री प्रदान कर मेरी सहायता की। अंत में, मैं सभी शुभचिंतकों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने पूरे शोध प्रबंध लेखन में पूरा मानसिक सहयोग दिया।

नीरजा. टी. के

प्राक्कथन

मिथक दुनिया के सबसे समृद्ध पौराणिक कहानियों का एक खज़ाना है । इसका अद्‌भुत एवं अनूठा पहलू यह है कि सभी लोग अपने देश या समाज के इन सदियों पुरानी कहानियों से पूर्ण रूप से परिचित है । इन कहानियों को हमे बचपन में सुनाया जाता है जो कल के लिए एक अच्छे नागरिक बनने के लिए हमारे व्यक्तित्व को आकार देता है । इसके साथ मिथक किसी व्यक्ति से संबंधित विरासत या संस्कृति का निर्माण में अहम भूमिका निभाती है । मिथक और लोक कथाएँ लोगों की धर्मों का आधार बन जाती है जिनका वे सदियों से पालन करते आए हैं ।

मिथकीय कहानियों में जो बुराई और अच्छाई के बीच लड़ाई उल्लेखित है उससे हमें नैतिक मूल्य सीखने को मिलता है । मिथक पूर्वजों के लिए महत्वपूर्ण थी, आज भी महत्वपूर्ण है और हमेशा रहेगी। इसका प्रभाव इतना सशक्त है कि कई मानवीय तर्कों में भी मिथक का प्रतिबिंब छायांकित होता है । मिथक को महत्वपूर्ण मानने के पीछे का सबसे मुख्य वजह यह है कि यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कुछ वास्तविक तथ्य शामिल है । एक ही मिथक में विश्वास करने वाले लोगों के बीच कभी-कभी एकता भी होता है । इनमें मतभेद होने की संभावना कम दिखाई देता है । मिथक को अपने आप में अयथार्थ माना जाता है जो मनुष्य के अंदर कृतज्ञ एवं आशा की भावना को जगाती है । इसी कारण से मिथक का मनुष्य पर प्रभाव के संबंध में तार्किक रूप से वर्णन करना कठिन है । मिथकीय साहित्य के लेखन में विभिन्न रचनाकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनमे नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के मिथकीय उपन्यासों पर मैंने शोध कार्य किया है ।

प्रेरणा

बचपन से ही रामायण और महाभारत में मेरी गहरी रुचि रही है । रामायण टीवी शो के विश्व रिकॉर्ड तोड़ने की खबर ने मेरे दिलचस्पी को फिर से जगा दिया है, जिससे इस विषय पर शोध करने की इच्छा जागृत हुई है । इसके अतिरिक्त, एक लेखक के रूप में अमीश त्रिपाठी ने मुझे पौराणिक कथाओं की दुनिया से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे इन प्राचीन कथाओं के प्रति मेरा आकर्षण और बढ़ गया।

शोध के उद्देश्य

- नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित रामचंद्र की कथा श्रृंखला की तुलना करना ।

- दोनों लेखकों के मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य – वैषम्य को समझना।
- पारंपरिक राम कथा और इन लेखकों की राम कथा में अंतर का अध्ययन करना।
- दोनों लेखकों की राम कथा की प्रासंगिकता को उजागर करना।

साहित्य समीक्षा

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के साहित्य लेखन से संबंधित कई सारे शोध कार्य हिंदी और अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में हुए हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार है -

- नरेंद्र कोहली के राम कथात्मक उपन्यास : शिल्पगत वैशिष्टय - सरोजिनी पाण्डेय, छत्रपति शाहु जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, 1998
- नरेंद्र कोहली के राम कथा मूलक उपन्यासों में पौराणिकता एवं समकालीन प्रासंगिकता - दिनेशचंद्र त्रिवेदी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, 2005
- नरेंद्र कोहली के साहित्य में मिथक एवं यथार्थ - राव पुनीत कुमार, महात्मा गाँधी काशी विद्या पीठ, वाराणसी, 2010
- नरेंद्र कोहली के राम कथा आधारित उपन्यासों का समीक्षात्मक अनुशीलन - गुंजन शर्मा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मीरठ, 2015
- नरेन्द्र कोहली के राम कथात्मक उपन्यास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - जयश्री पि, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, 2019
- डॉ. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में मिथक - क्षत्रीय आरती सिंह, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद 2022
- मिथ, मॉडर्निटी एंड फिलोसोफी इन अमीश त्रिपाठी नॉवेल्स - सुनीता शर्मा, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला यूनिवर्सिटी, राजस्थान, 2017
- रिसेप्शन ऑफ़ मिथ इन द सेलेक्ट नॉवेल्स ऑफ़ अमीश त्रिपाठी ए क्रिटिकल स्टडी - प्रीती मनसुखलाल, माधव विश्वविद्यालय राजस्थान, 2021
- मिथ अस नैरेटिव इन द सेलेक्ट वर्क्स ऑफ़ कविता कैन एंड अमीश त्रिपाठी – रूबी गुप्ता, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, 2021
- कंटेम्पोरैज़िंग रामायण – ए स्टडी ऑफ़ अमीश त्रिपाठी'स नॉवेल्स – निधी बूरा, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी, रोहटक, 2022

- रीइंटरप्रेटिंग मिथ इन द सेलेक्ट वर्क्स ऑफ़ अमीश त्रिपाठी एंड अशोक. के. बैंकर – योगिनी. ए. सोलंकी, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, 2023
- सीता, राम, रावणा – ए कंटेंपोररी रीटेल्लिंग इन अमीश त्रिपाठी एंड आनंद नीलकंटन – अर्चना तनवर, गुरुकुल कांगड़ी यूनिवर्सिटी, हरिद्वार, 2023

उपर्युक्त सूची से हमें यह ज्ञान होता है कि दोनों लेखकों के साहित्य पर हिंदी और अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में शोध कार्य हुआ है और आज भी हो रही है, किंतु दो विभिन्न भाषा क्षेत्र के इन लेखकों के मिथक की तुलना पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला के चौथे उपन्यास 'लंका का युद्ध', 2022 दिसंबर में प्रकाशित होने के कारण इस पर भी कोई शोध परक अध्ययन नहीं हुआ है। जहाँ तक संभव है मैंने इस विषय पर शोध अध्ययन करने का प्रयास किया है। मैंने अपने शोध कार्य को पाँच अध्याय में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय - मिथक – अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व में मिथक का अर्थ, परिभाषा, विकास और प्रकार के संबंध में लिखा है। मिथक की उत्पत्ति को गहन रूप से समझने के लिए इसमे भारतीय एवं पाश्चात्य मिथक पर भी चर्चा किया गया है। हिंदी साहित्य में मिथक का उद्भव और मिथक एवं साहित्य में संबंध पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय - नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन में इन लेखकों के जीवन परिचय, उनके लेखन कार्य और उनको प्राप्त पुरस्कार व सम्मान के बारे में लिखा है यह अध्याय भारतीय साहित्य के दो भिन्न साहित्यिक क्षेत्र के लेखकों के व्यक्तित्व एवं सृजना संसार को समझने में सहायता करता है।

तृतीय अध्याय - नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में मिथक – एक अवलोकन में नरेंद्र कोहली के राम कथा श्रृंखला अभ्युदय (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध) की कथावस्तु एवं उनके मिथकीय दृष्टिकोण का परिचय दिया गया है। राम कथा को लेकर लेखक की अलग दृष्टिकोण का इसमें संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय - अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में मिथक - एक अवलोकन में अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला (राम इक्षवाकु का वंशज, सीता मिथिला की योद्धा, रावण आर्यवर्ता का शत्रु, लंका का युद्ध) की कथावस्तु और उनके मिथकीय दृष्टिकोण के संबंध में लिखा है। पारंपरिक रामायण को कैसे इन्होंने समकालीन समस्याओं के साथ जोड़कर लिखा है, इस पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय - नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण - एक तुलना में नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के राम कथा संबंधित मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य वैषम्य पर चर्चा किया गया है । राम का बाल्य जीवन, पारिवारिक संबंध, पात्र परिकल्पना, गुरु की महिमा, राम रावण युद्ध का चित्रण, शीर्षक की सार्थकता, लेखन शैली, पकृति एवं संस्कृति का चित्रण, समसमायिक विषयों में प्रासंगिकता, उद्देश्य एवं संदेश आदि विषयों का विश्लेषण किया गया है ।

उपसंहार में समुचित शोध एवं उपलब्धियों का सार और उपन्यासों का विश्लेषण दिया गया है । दोनों लेखकों के राम कथा श्रृंखला की तुलना करने के बाद हम इस नतीजे पर पहूँच सकते हैं कि दोनों लेखकों के साहित्य के बीच काफी बड़ी समय अंतराल होने के बावजूद डी दोनों के राम कथाओं में आश्चर्यजनक रूप से सामानताएँ देखने को मिलता है और दोनों ही अपने समय को सफल मिथकीय कथाओं के लेखक हैं ।

मैं अपने इस शोध कार्य को आप जैसे विद्वानों के समक्ष समर्पित करती हूँ । इस शोध में किसी भी प्रकार की त्रृटियाँ हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ और आशा है कि मेरी प्रगति के लिए आशीर्वाद देंगे।